

Padma Shri



SHRI CHHULTIM CHHONJOR

Shri Chhultim Chhonjor, a retired tailor master from the Government Weaving Centre of Padum Zanskar, Ladakh, is a social activist.

2. Born on 3rd July, 1943 in a poor family from Stongday, Shri Chhonjor could not receive his formal education, as there was no formal school in their village. Therefore, he was sent to the Stongday monastery to learn Bodhi language. To convey his gratitude towards the Stongday monastery for imparting him formal education in Bodhi, he constructed a 30 feet lofty assembly hall for the Stongday monastery, which is still an architectural marvel in the entire Ladakh region.

3. Being an alumnus of the Stongday monastery, Shri Chhonjor has always been a philanthropic since his tender age. He also constructed the artificial Ice Store at Stongday monastery in order to overcome the problem of water scarcity in the region. In 2003, when many of the passengers were stranded on the Padum- Kargil highway due to heavy avalanche on the road, Shri Chhonjor stepped in to clear snow from the Rarigdum to Akshow road and thus rescued 64 stranded passengers from extreme cold condition of the region. Again in 2009, he rescued 7 car passengers stranded at the Penzila Top without any help and financial aid.

4. In 2016, Shri Chhonjor singlehandedly constructed 40-km stretch of NPD road from Ramjak, an inhabited area on the Ladakh side of Shinkula pass, to Kargyak village, in the Zanskar Sub-Division of Ladakh and thus connected this region to the outside world. In this effort he spent more than Rs. 57 lakhs from his own pocket, which included his life saving as well as the amount raised after selling his ancestral property.

5. Shri Chhonjor is a recipient of several awards and honours including various certificates for his humanistic works including many district awards from the Ladakh Autonomous Hill Development Council, (LAHDC) Kargil. He has also received letters of appreciation from Deputy Commissioner-Kargil District and Chief Executive Councillor, LAHDC, Kargil.

पद्म श्री



श्री छुलटिम छोजोर

श्री छुलटिम छोजोर लद्दाख के पद्म जंस्कार के सरकारी बुनाई केंद्र के सेवानिवृत्त दर्जी मास्टर हैं और एक सामाजिक कार्यकर्ता हैं।

2. 3 जुलाई, 1943 को स्टोंगडे के एक गरीब परिवार में जन्मे श्री छोजोर अपने गांव में कोई स्कूल न होने के कारण औपचारिक शिक्षा हासिल नहीं कर पाए। इसलिए उन्हें बोधि भाषा सीखने के लिए स्टोंगडे मठ भेजा गया। उन्होंने बोधि की औपचारिक शिक्षा प्रदान करने के लिए स्टोंगडे मठ के प्रति कृतज्ञता स्वरूप 30 फुट ऊंचे असेंबली हॉल का निर्माण करवाया, जो आज भी पूरे लद्दाख क्षेत्र में वास्तुशिल्प का एक शानदार नमूना है।

3. स्टोंगडे मठ के पूर्व छात्र होने के नाते, श्री छोजोर बचपन से ही परोपकारी रहे हैं। उन्होंने इस क्षेत्र में पानी की कमी की समस्या दूर करने के लिए स्टोंगडे मठ में कृत्रिम आइस स्टोर का भी निर्माण किया। 2003 में भारी हिमस्खलन के कारण कई यात्री पादुम-कारगिल राजमार्ग पर फंस गए थे तब श्री छोजोर रारिगडम से अक्सो रोड तक बर्फ साफ करने के लिए आगे आए और भीषण ठंड में फंसे 64 यात्रियों को बचाया। 2009 में उन्होंने एक बार फिर बिना किसी मदद और वित्तीय सहायता के पेंजिला टॉप पर फंसे 7 कार यात्रियों को बचाया।

4. 2016 में श्री छोजोर ने लद्दाख के जंस्कार उपमंडल में शिकुला दर्रे के लद्दाख की ओर के एक आबाद क्षेत्र रामजक से कार्ग्याक गांव तक 40 किलोमीटर लम्बी एनपीडी सड़क का अपने दम पर निर्माण किया और इस इलाके को बाहरी दुनिया से जोड़ दिया। उन्होंने इस प्रयास के लिए अपनी जेब से 57 लाख रुपये से अधिक खर्च किए जिसमें उनकी जीवन भर की बचत और पैतृक संपत्ति बेचने के बाद जुटाई गई राशि भी शामिल थी।

5. श्री छोजोर को अनेक पुरस्कार और सम्मान प्राप्त हुए हैं जिनमें मानवता वादी कार्यों के लिए लद्दाख स्वायत्त पर्वतीय विकास परिषद, कारगिल की ओर से कई जिला स्तरीय पुरस्कार और प्रमाण पत्र शामिल हैं। उन्हें कारगिल जिले के उपायुक्त और लद्दाख स्वायत्त पर्वतीय विकास परिषद के मुख्य कार्यकारी पार्षद, कारगिल से भी प्रशंसा पत्र प्राप्त हुए हैं।